नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा Mahatma Gandhi
Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha (संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत
स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) (A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com
वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी कविता के बदले तेवर : मक्तिबोध और शमशेर विषय पर हिंदी विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राषट्रीय संगोषठी उदघाटित

'अभिवयक्ति' भित्ति पत्रिका का लोकार्पण

शमशेर, मुक्तिबोध की कविताओं पर आधारित पोसटर प्रदर्शनी खास आकर्षण

वर्धा, 23 मार्च 2017: महातमा गांधी अंतरराषट्रीय हिंदी विशवविद्यालय के हिंदी एवं तुलनातमक साहितय विभाग की ओर से 24 एवं 25 मार्च को दो दिवसीय राषट्रीय संगोषठी का उदघाटन शक्रवार, 24 मार्च को विशवविद्यालय के गालिब सभागार में किया गया। 'हिंदी कविता के बदले तेवर : मक्तिबोध और शमशेर' विषय पर आयोजित संगोषठी के उदघाटन समारोह की अधयक्षता विशवविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीशवर मिश्र ने की। समारोह में भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिलली के निदेशक तथा नया ज्ञानोदय पत्रिका के संपादक लीलाधर मंडलोई, शमशेर रचनावली की संपादक प्रो. रंजना अरगड़े, अहमदाबाद, वरिषठ साहितयकार प्रो. सरज प्रसार मिश्र, नागपर, साहितय विद्यापीठ के अधिषठाता प्रो. कृषण कुमार सिंह, संगोषठी की संयोजक डॉ. प्रीति सागर तथा सहसंयोजक डॉ. रामानज असथाना मंचासीन थे।

संगोषठी का उदघाटन दीप प्रजवलन से किया गया। संगोषठी में बीज वकतवय भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक तथा नया ज्ञानोदय के संपादक लीलाधर मंडलोई ने दिया। उनहोंने मक्तिबोध की कविताओं का जिक्र करते हए कहा कि उनकी कविता में 28 प्रकार के रंगो का उललेख आता है। उनकी 19 लंबी कविताओं में रंग, प्रतीक एवं चित्र का संचार है और वह एक हॉरर फिलम की तरह होती है। उनकी कविताओं पर मैक्सिकन भित्ति चित्र का प्रभाव है। मंडलोई ने मक्तिबोध को लोकशिक्षण के कवि की संज्ञा देकर कहा कि उनकी कविताओं में पर्यावरण और विसथापन की चर्चा होती है जो आज की सबसे बड़ी समसयाओं में से है । उनहोंने मक्तिबोध और शमशेर को समानधर्मी कवि बताते हुए उनकी कविताओं में निहित समानधर्मी ततवों का उदाहरण भी प्रसतत किया।

मखय अतिथि तथा शमशेर रचनावली की संपादक प्रो. रंजना अरगड़े ने दोनों कवियों की कविताओं का उललेख करते हए कहा कि उनहें समझना कठिन प्रतित होता है। उनका मानना था कि दोनों कवियों की कविताएं दशय और शरवय प्रतिमाओं के प्रयोग की कविताएं हैं ।

अधयकषीय उदबोधन में कुलपति प्रो. गिरीशवर मिश्र ने कहा कि आज के समय में हिंदी कविता को समझने के तेवर भी बदल गये हैं । दोनों कवि अपनी कविता में सच की लडाई के संघर्ष करते है और साथही सच की खोज करते हैं। उनके कहने की अदभत शैली ही उनहें इतर कवि से अलग बनाती है। उनहोंने कहा कि मक्तिबोध और शमशेर ने हर तरह के मनुषय की पीड़ा को समझा और उसको अपनी कविताओं में सथान दिया है।

सवागत वकतवय साहितय विद्यापीठ के अधिषठाता प्रो. कृषण कुमार सिंह ने प्रसतुत किया। समारोह का संचालन साहितय विद्यापीठ की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रीति सागर ने किया तथा धनयवाद ज्ञापन हिंदी एवं तुलनातमक साहितय विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. रामानुज असथाना ने प्रसतुत किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में विद्यार्थियों ने विशवविद्यालय का कुलगीत प्रसतुत किया। सत्री अधययन विभाग में एम. फिल. की शोधार्थी जयोति गिरी ने शमशेर की गज़ल 'भूला हुआ था आज तक, अपने घर को मैं..' प्रसतुत की। गजेंद्र और साथी विद्यार्थियों ने मुक्तिबोध की कविता 'ओ मेरे

आदर्शवादी मन...' प्रस्तुत की। मंचासीन अतिथियों का स्वागत रजनी झा, भावना मासीवाल, गजेंद्र पांडे, आलोक पांडे तथा कृष्णकुमार मिश्र ने पुष्पगुच्छ से किया।

इस अवसर पर विभिन्न विद्यापीठों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, प्रतिभागी, अध्यापक, अधिकारी, शोधार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

उदघाटन समारोह के बाद हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के विद्यार्थियों की भित्ति पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का लोकार्पण साहित्यकार प्रो. सरजू प्रसाद मिश्र ने फीता काटकर किया। पत्रिका की संपादक श्वेता मिश्रा, संरक्षक डॉ. रामानुज अस्थाना तथा मार्गदर्शक डॉ. बीर पाल सिंह यादव है। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र के साथ संगोष्ठी में निमंत्रित अतिथि प्रमुखता से उपस्थित थे। अतिथियों ने अपनी प्रतिक्रियाएं भी लिखी और विद्यार्थियों के प्रयास की प्रशंसा की। कवि मुक्तिबोध एवं शमशेर की कविताओं पर आधारित पोस्टर की प्रदर्शनी इस आयोजन का एक मुख्य आकर्षण रही। विद्यार्थियों ने कलात्मक तरीके से पोस्टर पर लिखी कविताओं का अवलोकन कुलपति प्रो. मिश्र के साथ अन्य अतिथि तथा प्रतिभागियों ने किया। संगोष्ठी में देशभर के साहित्यकार, अध्यापक, शोधार्थी आदि ने सहभागिता की है।

संगोष्ठी के दूसरे दिन शनिवार, 25 मार्च को कवि शमशेर की वैचारिक भूमि विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता प्रो. रंजना अरगड़े करेंगी। आधार वक्तव्य डॉ. आशा मेहता देंगी। संचालन डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी करेंगे। वक्ता के रूप में डॉ. जयलक्ष्मी, नवल किशोर दुबे, डॉ. मनोज तिवारी उपस्थित रहेगें।

पांचवा सत्र शमशेर की कविता और चित्रकला का अंत:संबंध एवं इंद्रिय बोध विषय पर होगा जिसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा करेंगे। आधार वक्तव्य प्रो. वशिष्ठ अनूप देंगे। संचालन डॉ. रामानुज अस्थाना करेंगे। वक्ता के रूप में श्री लीलाधर मंडलोई, प्रो. भारती गोरे, डॉ. योगेश कुमार वक्तव्य देंगे। समानान्तर सत्र हिंदी कविता के बदले तेवर : मुक्तिबोध विषय पर होगा जिसकी अध्यक्षता डॉ. पद्माप्रिया करेंगी तथा 'हिंदी कविता के बदले तेवर : शमशेर' पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता डॉ. आशा मेहता करेंगी।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
द्वारा आयोजित
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
द्वारा आयोजित
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
हिंदी कविता के बदले तेवर : मुक्तिबोध और शमशेर
मार्च 24-25, 2017
स्थान : गालिब सभागार

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
हिंदी कविता के बदले तेवर : मुक्तिबोध और शमशेर
मार्च 24-25, 2017
स्थान : गालिब सभागार